UGC No. 45149

ISSN : 2231-1688

SHODH DARPAN

शोध दर्पण

An International Multidisciplinary Peer Reviwed Refereed Research Journal

Vol. : VIII **No. II** **July-December** **2017**

Editor-in-Chief

Dr. Gyan Prakash Mishra
Department of Journalism
Banaras Hindu University, Varanasi

Editor

Dr. Rajesh Kumar Rai

© Publisher
Atal Bihari Bramha Foundation
B22/166 B-9, Shankul Dhara Pokhara,
Khojawa, Varanasi (U.P.)
INDIA

- **Agricultural Infrastructures and Agricultural Productivity: A Case Study of Mewat Region** — *Gourav Nain, Virender Singh Negi, Dr. Poonam Kumria* — 327-342
- **A Review on factors influencing work life balance** — *Roshni jaiswal* — 343-352
- **Cytogenetic Effects of Ethanol Extract of Sun Dried Seeds of Soursop (Annona muricata) on The Male Germ Line Cells of The African Pest Grasshopper Zonocerus variegatus L.** — *Dr. Bhupendra Prasad Singh* — 353-358
- **Medicinal use of Indian Spices** — *Dr. Amrapali Trivedi* — 359-362
- **ब्रिटिश राज के विरूद्ध 1857 ई. के क्रान्ति में महिलाएँ** — *डॉ0 वेदपाल राना* — 363-366
- **मोहन राकेश के नाटक 'पैर तले की जमीन' में अस्तित्ववाद** — *चन्द्रप्रकाश मिश्र* — 367-371
- **Medical Education and Logic in Buddhist Education System: A Historical Survey** — *Sanjeev Kumar* — 372-377
- **हिन्दी के नाट्य साहित्य में दलित चिंतन एवं आलोचना** — *डॉ0 रेनू दुग्गल* — 378-381
- **नैतिकता, अध्यात्म और उत्थान की त्रिवेणी : सहज एवं सप्तक** — *डॉ0 दीप्ति सिंह* — 382-385

नैतिकता, अध्यात्म और उत्थान की त्रिवेणी : सहज एवं सप्तक

डॉ0 दीप्ति सिंह
एसोसिएट प्रोफेसर–संगीत, राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गाजीपुर

भूमण्डलीकरण के वर्तमान परिदृश्य में क्रमशः अध्यात्मिक एवं नैतिक मूल्यों का हास हुआ है तथा उपभोक्तावादी भौतिक लिप्सा पुष्ट हुई है। आज परमात्मा के नाम पर जिस प्रकार के कार्य किये जा रहे हैं, वे विचलित करने वाले हैं। लगता है, जैसे इस कलयुग में मनुष्य ने अपना सारा विवेक खो दिया है। मानव अत्यन्त व्यक्तिवादी बन गया है, उसका स्वयं पर नियंत्रण नहीं है। वैश्विक उपभोक्तावादी संस्कृति ने लोगों को दास बना दिया है, फिर भी लोग सोचते हैं कि वे स्वतंत्र लोग हैं और वे जो चाहे कर सकते हैं। इस स्वच्छन्दता के परिणामस्वरूप वे इतने छिनौने हो गये हैं और जिस प्रकार के कुकृत्य कर रहे हैं, उस पर विश्वास करना कठिन है। कलयुग के लिये कहा भी गया है कि यह भ्रम का युग है और यदि इस भ्रम में आप फँस गये तो समाप्त हो जायेंगे, परन्तु यदि भ्रम को पहचान लेंगे तो सत्य को खोजने लगेंगे। यही कारण है कि आज जिज्ञासा बहुत बढ़ गई है, क्योंकि लोग भ्रम को महसूस कर रहे हैं। वे जान गये हैं कि आज मंगल और पवित्र विचार भयानक रूप से नष्ट हो रहे हैं। जो कुछ वो जान रहे हैं वह पूर्ण सत्य नहीं है। अब वे जानना चाहते हैं कि सत्य क्या है? हमारी नैतिकता विनम्रता और अच्छाई का सोत क्या है, जो हमारे भीतर सद्–सद् विवेक जागरित करता है।

वास्तव में यह शक्ति हमारे भीतर जीवाणु की तरह विद्यमान है, यह कह सकते हैं कि बीज रूप में विद्यमान है। प्रत्येक व्यक्ति के अन्दर यह शक्ति अन्तर्जात होती है जो सुसुप्तावस्था में बीज रूप में विद्यमान रहती है। स्वतः इसका अंकुरण होता है और सहज ही इसकी अभिव्यक्ति होती है। ठीक वैसे ही, जैसे हम एक बीज को अंकुरित होकर वृक्ष बनते हुए देखते हैं। यही योग है, सजह रूप से घटित हुआ योग ही सहजयोग है। सत्य साधक जब अपनी तलाश आरम्भ करते हैं, ईमानदारी से, सोच समझकर, परन्तु बन्द आँखों से (Blindly), तब पथ भ्रष्ट होकर वे कुगुरूओं के शिकंजे में बुरी तरह से फँस जाते हैं। ये तथाकथित गुरू वास्तव में चोर हैं, जो राजाओं की वेशभूषा धारण किये हुए हैं। हमारे धर्म ग्रन्थों में ये वर्णित है, कि मानव को एक ऐसी किसी स्थिति तक उन्नत होना है जहाँ वह अपनी चेतना के चतुर्थ–आयाम (तुर्या–अवस्था) को प्राप्त कर ले। फ्रांसिस क्रिक जैसे वैज्ञानिक चेतना विषय पर, विशेष रूप से दिव्य चेतना (renes ok Vision) पर शोध कर रहे थे। इन्होंने तमाम पुस्तकें लिखी हैं, तुर्या–वस्था सम्पूर्ण सूक्ष्म चेतनावस्था है। यह उच्च चेतना सांसारिक मानवीय चेतना का पथ प्रदर्शन करती है और उसे उत्थान के पथ पर ले जाती है। प्रायः हम तीन आयामों में रहते हैं। सन्तों ने चतुर्थ–आयाम प्राप्त किया और इस उत्क्रान्ति के माध्यम से वे पूर्ण प्रशान्ति (Tranquillity), पूर्णसामंजस्य (Integration) और वास्तविकता की पूर्ण चेतना पा लेते हैं। जिन चार आयामों में हम जीवित रहते हैं, वे हैं (1) शारीरिक, (2) मानसिक, (3) भावनात्मक एवं (4) अध्यात्मिक। अर्थात् तीन आयामों – शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक का उग्रतापूर्वक उपयोग करने के पश्चात् हम अपने जीवन की सारहीनता को समझ जाते हैं और तब पूर्ण सत्य को खोजने के लिये, चतुर्थ आयाम की ओर मुड़ते हैं, जो अध्यात्मिकता का है। जो ज्ञान हमें पूर्व में प्राप्त था, उससे हम संतुष्ट नहीं होते क्योंकि वह तो मानसिक शान्ति (Tranquil Mind) भी प्रदान नहीं कर सकता।

भारत में, भृगु मुनि ने 'नाडी ग्रन्थ' में, ऋषि मार्कण्डेय ने पुराण में, आदि शंकराचार्य ने 'विवेक चूडामणि' तथा 'सौन्दर्य लहरी' में इस ऋतम्भरा प्रज्ञा या चतुर्थ आयाम का वर्णन किया। महाराष्ट्र में बारहवीं शताब्दी में संत ज्ञानेश्वर ने विस्तार से इस पर चर्चा की।

गीता में न तो कुण्डलिनी का और न ही इसकी जागृति का कोई वर्णन है। यद्यपि आरम्भ में ही श्रीकृष्ण ने कहा है कि व्यक्ति को स्थितप्रज्ञ अवस्था प्राप्त कर लेनी चाहिये। स्थितप्रज्ञ अर्थात् दिव्यज्ञान के माध्यम से संतुलित व्यक्ति। यह सब एक वर्णन मात्र था, वास्तव में उन्होंने यह नहीं बताया कि यह स्थिति किस प्रकार प्राप्त की जाये?

ISSN 2231-1688 Shodh Darpan, Vol. VIII, No. II, 2017

देवी ने 05 मई, 1970 में निकाला था। विभिन्न चक्र, उनका स्थान, उनके देवता, उनके गुण तथा उनका स्वरों से सम्बन्ध नीचे तालिका में दिया जा रहा है।

स्पष्ट रूप से परिलक्षित है कि सहजयोग के माध्यम से आत्म–साक्षात्कार तो मिलता ही है साथ ही साथ अध्यात्म और नैतिकता खुद–ब–खुद हमारे अन्दर स्थापित होती है, रोग दूर होते हैं, स्वर और उनके देवता जागृत होते हैं तथा यह सब कुछ बिना कोई मूल्य चुकाये हमें प्राप्त होता है। वास्तव में ये अनमोल रत्न हैं जिनसे जिज्ञासु और सत्य–साधक आशीर्वादित किये जाते हैं।

क्र.सं.	स्वर	चक्र	तत्त्व	देवता	गुण	उपचार राग
1	षड्ज (सा)	मूलाधार चक्र	पृथ्वी तत्त्व	श्री गणेश, श्री कार्तिकेय, श्री निर्मल गणेश, श्री गौरी गणेश	अबोधिता, विवेक, पावनता, मंगलमयता	बिलावल, श्याम–कल्याण
2	ऋषभ (रे)	स्वाधिष्ठान चक्र	अग्नि तत्त्व	श्री ब्रह्मदेव–सरस्वती, निर्मल विद्या, चित्त शक्ति	शारीरिक मानसिक क्रिया, सृजनात्मकता, ललित कला, शुद्ध विद्या	गुर्जरी तोड़ी यमन
3	गांधार (ग)	नाभि या मणिपुर चक्र	जल तत्त्व	श्री विष्णुलक्ष्मी, श्री गृहलक्ष्मी, श्री राजलक्ष्मी	संतुष्टि, धर्म, जीविकोपार्जन, का साधन	भीमपलासी, आभोगी
4	मध्यम (म)	अनहद या हृदय चक्र	वायु तत्त्व	श्री शिव पार्वती, श्री सीता राम, श्री जगदम्बा	प्रेम, सुरक्षा, मर्यादा, निर्भयता, निडरता	भैरव, अहीर–भैरव, दुर्गा, ललित
5	पंचम (प)	विशुद्धि चक्र	आकाश तत्त्व	श्री राधा–कृष्ण, श्री विष्णुमाया, श्री यशोदामाता, श्री विठ्ठल रूक्मिनी	साक्षी– तटस्थ भाव, कूटनीतिज्ञता	जययवन्ती, देश
6	धैवत (ध)	आज्ञा चक्र	प्रकाश तत्त्व	श्री महावीर, श्री महागणेश, श्री जीसस मेरी,	क्षमाशीलता, परमात्मा के प्रति समर्पण और त्याग	जोगिया, बागेश्री, भूपाली, देशकार
7	निषाद (नि)	सहस्रार चक्र	परम चैतन्य	श्री आदिशक्ति, सहस्रार–स्वामिनी, मोक्ष–प्रादायिनी	परन चैतन्य से एकाकारिता निरानन्द	दरबारी, भैरवी

संदर्भ–

- चौतन्य लहरी मई–जून 2007 निर्मल इंफोसिस्टम एवं टेक्नोलॉजी प्रा.ली. श्री ओ.पी.चांदना चौतन्य लहरी मार्च–अप्रैल 2007 निर्मल इंफोसिस्टम एवं टेक्नोलॉजी प्रा.ली. श्री ओ.पी.चांदना
- चौतन्य लहरी सितंबर अक्टूबर 2007 निर्मल इंफोसिस्टम एवं टेक्नोलॉजी प्रा.ली. श्री ओ.पी.चांदना
- The breeze of Sahasrara miracles of Her Holiness Shri Mataji Nirmala Devi and Sahaja Yoga published by Nirmal transformation Pvt. Ltd. Pune 2009
- Music and Sahaja Yoga- Arun Apte -Nirmal Transformation Pvt Ltd Pune 1997 6) The Divine Cool Breeze SEPTEMBER-OCTOBER 2007 Nirmal Info systems & Technologies Pvt. Ltd. ED- Shri O.P CHANDNA Pvt.
- The Divine Cool Breeze July-August 2005 Nirmal Infosystems & Technologies Pvt. Ltd. ED- Shri O.P CHANDNA
- चौतन्य लहरी जनवरी–फरवरी 2006 निर्मल इंफोसिस्टम एवं टेक्नोलॉजी प्रा.ली. श्री ओ.पी.चांदना